



‘ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट’ के आयोजन के लिए फिक्की के साथ एमओयू

जयपुर, 18 जून। राज्य सरकार ने ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (GRAM) के आयोजन के लिए शनिवार को शासन सचिवालय में फैंडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) के साथ एमओयू पर हस्ताक्षर किए हैं। उल्लेखनीय है कि जयपुर के सीतापुरा में स्थित जयपुर एग्रीबिशन एंड कन्वेंशन सेंटर (जेईसीसी) में (GRAM) का आयोजन 9 से 11 नवंबर तक किया जायेगा। राज्य सरकार की ओर से प्रमुख शासन सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी श्रीमती नीलकमल दरबारी और फिक्की की तरफ से उप महासचिव श्री विनय माथुर ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

कृषि मंत्री श्री प्रभु लाल सैनी ने कहा कि



‘(GRAM) के आयोजन का मुख्य उद्देश्य कृषि क्षेत्र में त्वरित और सतत् विकास के माध्यम से किसानों का आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित करना तथा वर्ष 2022 तक किसानों की आय को दो गुना करना है। उन्होंने कहा कि (GRAM) में 40 हजार से अधिक किसान शामिल

होंगे। इसके अतिरिक्त इस वैश्विक आयोजन में राजस्थान की कृषि जलवायु के अनुरूप विश्व भर की सर्वोत्तम तकनीक और प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया जायेगा। यह मीट निवेशकों, निर्माताओं के साथ-साथ शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं के लिए भी एक महत्वपूर्ण मंच साबित होगा।

प्रमुख शासन सचिव, कृषि श्रीमती दरबारी ने कहा कि इस आयोजन के प्रचार-प्रसार के लिए देशभर में रोड़ शो आयोजित किए जायेंगे। ‘(GRAM) में भागीदारी के लिए इजरायल, नीदरलैंड, कनाडा एवं ऑस्ट्रेलिया को भी आमंत्रित किया गया है। इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिये बड़ी संख्या में व्यापारिक प्रतिनिधिमंडलों के आने की भी संभावना है।

अन्तर्राष्ट्रीय दलहन वर्ष - 2016

संयुक्त राष्ट्र संघ की सामान्य सभा ने वर्ष 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय दलहन वर्ष घोषित किया है। दलहनी फसलों के प्रति विश्वव्यापी जागरूकता को बढ़ावा देना तथा दलहनों के मानव स्वास्थ्य एवं पौषण, खाद्य सुरक्षा तथा पर्यावरणीय सतृता के पहलुओं को बढ़ाना इसका मुख्य उद्देश्य है। भारत विश्व का दलहन में सबसे बड़ा उत्पादक, आयातक तथा उपभोक्ता देश है। विगत वर्षों में गेहूँ तथा धान के उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई है, परन्तु दलहनी फसलों का उत्पादन गिरा है। देश में दालों का प्रति व्यक्ति उपभोग सन् 1961 में 65 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रति दिन था जो कि वर्ष 2011 तक 39.4 ग्राम प्रति व्यक्ति प्रति दिन ही बढ़ा जबकि अनाजों का प्रति व्यक्ति प्रति दिन उपभोग 399.7 ग्राम से 423.5 ग्राम/ व्यक्ति/ दिन हुआ। दालों की बढ़ती कीमत एवं गिरता उत्पादन एवं उत्पादकता ने इसके बारे में विचार करने हेतु मजबूर कर दिया है। दलहनी फसलों का उत्पादन एवं उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषकः-

★ अल्प अवधि में पकने वाली किस्मों एवं फसलों का चयन करें।

★ अधिक उत्पादन देने वाली रोग प्रतिरोधक किस्मों का उपयोग करें, सामयिक बुवाई के साथ पौधों की पर्याप्त संख्या रखें।

★ मिट्टी जाँच के आधार पर उर्वरकों का समन्वित उपयोग करें। जिप्सम का 250 किलो/ हैक्टर की दर से उपयोग करें। उर्वरकों की बेसल मात्रा ऊर कर डालें।

★ बीजोपचार करें, समन्वित खरपतवार नियंत्रण अपनायें, क्रांतिक अवस्थाओं यथा फूल आने से पूर्व तथा फली में दाना बनते समय सिंचाई अवश्य करें।

★ दलहन उत्पादन में सामान्य पी.एच. एवं विद्युत चालकता की मृदाओं एवं सिंचाई जल का ही उपयोग करें। लवणीय जल का सिंचाई हेतु उपयोग नहीं करें।

★ फसल सुरक्षा प्रौद्योगिकी का उपयोग उत्पादकता बढ़ाने के लिए करें। समेकित रोग एवं कीट प्रबन्धन, रोग-रोधी प्रजातियों के स्वस्थ बीजों का उपयोग, कर्षण क्रियाओं में बदलाव, कवकनाशी तथा जैवनाशी तत्वों का उपयोग इसमें सम्मिलित है।

★ दलहनी फसलों में फसलोत्तर प्रबन्धन के द्वारा सुरक्षा चक्र अपनायें।

अम्बरीष कुमार ने ग्रहण किया निदेशक कृषि का कार्यभार

जयपुर, 20 जून। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री अम्बरीष कुमार ने पंत कृषि भवन में निदेशक कृषि के पद का कार्यभार ग्रहण किया। उन्होंने इस अवसर पर विभागीय अधिकारियों की परिचयात्मक बैठक भी ली। श्री अम्बरीष कुमार इससे पूर्व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग में निदेशक के पद पर कार्यरत थे।



सब्जी के साथ मसाला जिन्स में शामिल किया जायेगा लहसुन को

जयपुर, 15 जून। कृषि मंत्री श्री प्रभु लाल सैनी ने बताया कि लहसुन को सब्जी के साथ मसाला जिन्स में भी शामिल किया जायेगा। उन्होंने बताया कि लहसुन के मसाला जिन्स में शामिल होने के बाद सामान्य अनाज मंडियों में भी लहसुन का विपणन हो सकेगा, इससे किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिल सकेगा और इसके विपणन में भी आसानी होगी। श्री सैनी ने बताया अभी लहसुन सब्जी की श्रेणी में ही आता

है इसलिए इसका विक्रय अनाज मंडियों में नहीं किया जा सकता है। जहाँ फल एवं सब्जी मंडी अलग से गठित हैं, वहाँ ही इसका विपणन हो पाता है। जिस क्षेत्र में फल एवं सब्जी मंडी पृथक से नहीं हैं, वहाँ इसके विपणन में बड़ी समस्या आती है। इसलिए किसान हित में लहसुन को मसाला श्रेणियों में शामिल किया जायेगा। उल्लेखनीय है कि भारतीय मसाला बोर्ड द्वारा भी लहसुन को मसालों की सूची में शामिल कर रखा है।

गाय का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए अमृत तुल्य

जयपुर, 16 जून। कृषि एवं गोपालन मंत्री श्री प्रभु लाल सैनी ने कहा कि गाय का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए अमृत तुल्य है। उन्होंने कहा कि गाय का दूध सुपाच्य होने के साथ कम वसा एवं उच्च गुणवत्ता के प्रोटीन की वजह से सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए उपयोगी है। श्री सैनी जयपुर डेयरी में आयोजित ‘गाय के दूध की लॉन्चिंग’ कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि विभिन्न शोध में गाय के दूध को माता के दूध के समान माना गया है। इस दूध के पीने से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और स्वाईन-फ्लू, कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों से बचा जा सकता है। गोपालन मंत्री श्री सैनी ने बताया कि राजस्थान पहला ऐसा राज्य है जहाँ मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने गौवंश के संरक्षण के लिये

अलग से काउ मिल्क सोसायटी बनाने की घोषणा की है। उन्होंने जयपुर डेयरी प्रबंधन को सबसे पहले गाय के दूध की बिक्री की शुरुआत करने के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि गोपालकों से गाय का दूध संकलित करने के लिए अलग से व्यवस्था की जायेगी। साथ ही मिल्क काउ समितियों का गठन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि यदि जयपुर डेयरी, गाय के दूध के संग्रहण, प्रोसेसिंग और पैकिंग के लिये अलग से कोई प्लान्ट लगाती है तो उसे आर्थिक सहयोग दिया जायेगा।

श्री सैनी ने बताया सरकार गौवंश संरक्षण व संवर्द्धन के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। राजस्थान देश का पहला राज्य है, जिसने पृथक से गोपालन विभाग बनाया है। सरकार ने गौकसी और तस्करी की घटनाओं को रोकने के लिए

कई कठोर कदम उठाये हैं। सरकार गौवंश के संरक्षण के लिए ऐसा सख्त कानून बनाने की तैयारी में है, जिससे गौवंश को बचाया जा सके। उन्होंने बताया कि देशी गौवंश के नस्ल सुधार के लिए इजरायल की एक कम्पनी के साथ एमओयू किया जायेगा।

इस अवसर पर श्री सैनी ने सरस गाय के दूध की लॉन्चिंग की और सरस लाडो योजना के पोस्टर का विमोचन किया। इसके साथ ही जयपुर डेयरी द्वारा तैयार की गई कॉलर ट्यून को भी सरस परिवार को समर्पित किया गया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैंडरेशन के प्रबंध निदेशक डॉ. राजेश शर्मा ने कहा कि सरस ब्राण्ड की उच्च गुणवत्ता के चलते सरस उत्पादों की मांग निरंतर बढ़ती जा रही है।

E mail : kheti_rl_batan@yahoo.co.in

इस अंक में...

www.krishi.rajasthan.gov.in



- ▶ जुलाई माह के कृषि कार्य
- ▶ परख
- ▶ अरडु वृक्ष : हरे चारे का
- ▶ खेती की नई जानकारी

पृष्ठ 2



- ▶ ट्रे में सब्जी उत्पादन-तकनीक
- ▶ ट्राईकोडर्मा मित्र फफूंद द्वारा मृदा जनित व्याधियों का उपचार

पृष्ठ 3



- ▶ अतिरिक्त आमदनी के लिए अन्तरासस्यन फसलें लेवें
- ▶ दीमक का जैविक प्रबन्धन : एक कारगर उपाय

पृष्ठ 4



जुलाई माह के कृषि कार्य



फसलोत्पादन

★मानसून की शुरुआत होते ही सोयाबीन की उन्नत किस्मों जे.एस. 335, जे.एस. 93-05, जे.एस. 55-60, एन.आर. सी-37 की बुवाई करें। बुवाई से पूर्व प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या कार्बेन्डेजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम दवा से उपचारित करें।

★बाजरा, ज्वार, मक्का के साथ मूंग, उड़द, चंवला या सोयाबीन की मिश्रित या अन्तरासस्य फसल लें।

★मूंगफली की झुमका किस्म के पौधों पर बुवाई के एक माह बाद मिट्टी चढ़ायें।

★बाजरे के बीज को गूंदिया या चेपा रोग से बचाव हेतु नमक के 20 प्रतिशत घोल (1 किलो नमक में 5 लीटर पानी) में लगभग पांच मिनट तक डुबोकर रखें। तैरते हुए कचरे एवं हल्के बीज को निकाल कर जला दें। बचे हुए बीज को निधार कर साफ पानी से धो लें एवं प्रति किलो बीज को 3 ग्राम थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. प्रति किलो बीज एवं अन्त में एजोटोबैक्टर व पी.एस.बी. कल्चर प्रत्येक के 3 पैकेट प्रति हैक्टर की दर से उपचारित करें।

★मक्का की फसल की बुवाई भी मानसून आगमन के साथ करें। 20-25 किलो प्रमाणित बीज का उपयोग करें। बीज को 3 ग्राम थाइरम (75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी.) प्रति किलो बीज की दर से तथा डाउनी मिल्ड्यू प्रभावित क्षेत्रों में बीज को 4 ग्राम मेटालेक्जिल (एप्रोन 35 एस.डी.) प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें।



बागवानी

★बेर की फसल में यूरिया की आधी मात्रा दें।

★तैयार किये गए गढ़डों में फलदार

पौधों को पिण्डी सहित लगायें।

★पपीते के पौधों की रोपाई करने का भी यह उचित समय है। गढ़डे में रोपाई से पूर्व 10 किग्रा. अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद, 300 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट व 50 ग्राम क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण मिलायें।

सब्जियाँ

★करेला, तुरई, टिण्डा, ककड़ी, बैंगन एवं टमाटर में फल छेदक कीट के नियंत्रण हेतु प्रभावित फलों को तोड़कर भूमि में गाड़कर नष्ट कर दें तथा मैलाथियोन 50 ई.सी. एक मिली. दवा प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें एवं कम से कम 3 दिन तक फल खाने के काम में नहीं लें।

★बैंगन में पौध रोपण के 20 दिन बाद 20 किलो नत्रजन (44 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर को खड़ी फसल में देकर सिंचाई करें। संकर किस्मों में यह मात्रा 30 किलो नत्रजन (62 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर रखें।

★टमाटर में पौध लगाने के 30 दिन बाद 30 किलो नत्रजन (65 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से खड़ी फसल में दें। संकर किस्मों में यह मात्रा 45 किलो (100 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर रखें।

★फूलगोभी की अर्ली पटना, अर्ली कुवारी, पूसा कातकी, पूसा दिपाली किस्मों की नर्सरी तैयार करने का उचित समय है। एक हैक्टर क्षेत्र में पौध तैयार करने हेतु 600 से 700 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है।

★पत्तागोभी की गोल्डन एकर, प्राईड ऑफ इंडिया किस्मों का चयन नर्सरी में पौध तैयार करने हेतु करें। इस हेतु 500 ग्राम बीज प्रति हैक्टर की दर से उपयोग करें।



★कुष्माण्ड कुल की सब्जियाँ लौकी, तुरई, टिण्डा, खीरा आदि फसलों में बुवाई के 25-30 दिन बाद नत्रजन 30 किलो (62 किलो यूरिया) व फूल आने के समय नत्रजन 30 किलो (62 किलो यूरिया) प्रति हैक्टर की दर से खड़ी फसल में देकर सिंचाई करें।

पुष्पोत्पादन

★बरसात के मौसम में गेंदा, बाल्सम, जीनिया आदि फूलों की पौध तैयार करें। गुलदाउदी, मोगरा, चमेली की कलमें लगाई जा सकती हैं। कलमों में शीघ्र जड़ें विकसित करने के लिए इण्डोल ब्यूटाइरिक एसिड रसायन 5 ग्राम को प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर कलमों को आधा मिनट तक घोल में डुबोकर क्यारियों में लगायें।



औषधीय व सुगन्धित पौधे

★जुलाई माह में 2.5 X 2.5 फीट पौधे से पौधे व कतार से कतार की दूरी रखते हुए तैयार खेत में अठारह हजार ग्वारपाठे के पौधे प्रति हैक्टर के अनुसार रोपाई करें।



पशुपालन एवं डेयरी

★पशु ब्याने के दो घंटे बाद बच्चों को खीस अवश्य पिलायें।

★अधिक दूध देने वाले पशुओं के ब्याने के 7-8 दिन तक दुग्ध ज्वर (मिल्क फीवर) होने की सम्भावना अधिक होती है इसलिए पशु को कैल्शियम-फॉस्फोरस

अरडू वृक्ष : हरे चारे का विकल्प

पशुपालन में खर्च होने वाले कुल खर्च का लगभग 65-70 प्रतिशत अकेले चारे पर ही व्यय होता है अतः उपलब्ध साधनों से पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक चारा सस्ती दरों पर उपलब्ध कराना पशुपालन व्यवसाय की सफलता के लिए आवश्यक है। इस प्रकार अधिक उत्पादन क्षमता वाले पशुओं का चयन कर व उन्हें पर्याप्त पौष्टिक चारा उपलब्ध कराकर पशु उत्पादन में गुणात्मक वृद्धि संभव है। वृक्ष व झाड़ियों में खेजड़ी, बोरड़ी, देशी बबूल, कैर, नीम व अरडू की पत्तियों को चारे के रूप में उपयोग में लाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में अगर चारे वाले वृक्ष घास के साथ लगाये जायें तो पेड़ों से प्राप्त हरी पत्तियों को सूखे चारे के साथ मिलाकर खिलाने से प्रोटीन की मात्रा अधिक हो जाती है एवं सूखे चारे का पाचन भी सही होता है।

अरडू एक ऐसा पौधा है जिसकी चारे के अलावा सूखी लकड़ी को माचिस की तिल्लियां, खिलौने तथा पैकिंग बक्से एवं हरी गीली लकड़ी से प्लाई इत्यादि बनाई जाती है। यह पौधा 400 मिमी. तथा इससे अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है या इस पौधे को जहाँ पर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो, लगाया जा सकता है। अरडू शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्र का मूल पौधा है यह दोमट मिट्टी में बहुत अच्छा

उगता है जिन क्षेत्रों में अधिक पाला तथा अधिक सूखा पड़ता है वहाँ यह नहीं उगाया जा सकता है।

नर्सरी में पौध तैयार करना:- नर्सरी में हमेशा ताजे बीजों की बुवाई करनी चाहिए 25X10 से.मी. की प्लास्टिक की थैलियों को पहले 2:1:1 (बालू मिट्टी, काली मिट्टी तथा खाद) से भर लेना चाहिये। थैलियों में 5-6 छिद्र कर देने चाहिये जिससे थैलियों में अधिक पानी बाहर निकल सके। इसके बाद अरडू के बीज को एक सेन्टीमीटर की गहराई पर बोकर वापस मिट्टी से ढक देना चाहिये। बोने के बाद इन थैलियों की अच्छी तरह सिंचाई करनी चाहिये। एक सप्ताह अच्छी सिंचाई करने के बाद हमेशा हल्की सिंचाई करते रहना चाहिये। लगभग 10-12 दिनों में बीजों का अंकुरण हो जाता है। जुलाई-अगस्त में जब पौधा 30-40 सेमी. की ऊँचाई का हो जाता है तब इसका खेत में या खेत के चारों ओर रोपण कर देना चाहिये।

पौध रोपण:- सिंचित क्षेत्रों में यह पौधा बहुत तेजी से बढ़ता है तथा 4-5 वर्ष में यह 4 मीटर तक ऊँचाई प्राप्त कर लेता है। पौध लगाने के लिए खेत के चारों ओर 5-6 मी. की दूरी पर 45X45 X45 सेमी की नाप से खड्डे खोद कर उनमें 15-20 किलो गोबर की खाद तथा खुदाई की हुई

मिट्टी वापस भर देनी चाहिये। जुलाई में पौधों का रोपण कर देना चाहिये। इस प्रकार एक हैक्टर में 80 पौधे लगाये जा सकते हैं।

पौधे 10-15 वर्ष में काटने लायक हो जाते हैं। इनकी पत्तियों को 3-4 वर्ष से ही काटना शुरू कर देते हैं, तथा वर्ष में दो बार कटाई की जाती है। पहली सितम्बर-अक्टूबर तथा दूसरी कटाई मार्च-अप्रैल में। इसकी पत्तियां बहुत ही पौष्टिक होती हैं। बिना डंठल के अरडू की पत्तियों में 18-20 प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। शुरु-शुरु में पत्तियों की मात्रा कम रहती है परन्तु जैसे-जैसे पौधा बढ़ता है पत्तियों का उत्पादन भी बढ़ता रहता है। एक परिपक्व पौधे से (10-15 वर्ष) दो से चार क्विंटल तक हरी पत्तियां मिल सकती हैं अगर एक हैक्टर में 50-100 पौधे लगाये जायें तो 10,000-15,000 रुपये की अतिरिक्त आमदनी हो सकती है।

अरडू के पौधे प्राप्त करने के लिए नजदीकी वन विभाग की नर्सरी में सम्पर्क करें। इस प्रकार किसान भाई अपने खेत के चारों ओर अरडू का वृक्ष लगाकर अपने पशुओं को इस पेड़ की पत्तियों को हरे चारे के रूप में खिला सकते हैं। इसकी लकड़ी से भी अतिरिक्त आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

परख

जून, 2016 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये विजेता कृषक का नाम है-

1. श्री गोपाल पुष्करना, पुत्र श्री शोभालाल पुष्करना, गांव- ईन्टाली, वाया- फतहनगर, तह. मावली, जिला- उदयपुर (313205)
2. अनिता, पुत्री श्री संस्करण सीगड़, ग्र. पो.- हरदयालपुरा, वाया- गोलूवाला, तह. पीलीबंगा, जिला- हनुमानगढ़ (335802)

इस माह के प्रश्न हैं -

प्र.1 दालों का देश में प्रति व्यक्ति प्रति दिन उपभोग कितने ग्राम है?

प्र.2 फूलगोभी की एक अगेती किस्म का नाम बतायें ?

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब। हमारा पता है:-

उप निदेशक, कृषि (सूचना), कमरा नम्बर 118, कृषि आयुक्तालय, पंत कृषि भवन, जयपुर-302005

का घोल 70 से 100 ग्राम प्रतिदिन पिलायें तथा 8-10 दिन तक पूरा दूध निकालें।

चारा फसलें

★हरे चारे के लिए लोबिया, ज्वार, बहुकटाई वाली चरी, मक्का, बाजरा व ग्वार की बुवाई करनी चाहिए।

★प्रति हैक्टर के लिए लोबिया का 35-40 किलो, ज्वार का 40-45 किलो, बहुकटाई वाली ज्वार चरी का 20-25 किलो, मक्का का 50-60 किलो तथा बाजरा का 10-12 किलो बीज आवश्यक होता है।

★ज्वार, बाजरा या मक्का तथा लोबिया को 2:1 अनुपात (ज्वार, बाजरा या मक्का की दो लाइनों के मध्य एक लाइन लोबिया) में बोने से अधिक पौष्टिक व अच्छा चारा प्राप्त होता है।

खेती की नई जानकारी के लिए....

बात करें

किष्कान कॉल सेन्टर
नि:शुल्क टेलीफोन
1800 180 1551 या 1551 पर
(प्रातः 6 से रात्रि 10 बजे तक)

देखें

जयपुर दूरदर्शन पर
खेती बाढ़ी-2 गुरुवार सायं 7.30 बजे
कृषि दर्शन सोमवार से शुक्रवार सायं 5.30 बजे
डी.डी.किष्कान → 24 घंटे-प्रतिदिन

सुनें

"खेती की बाता" आकाशवाणी कार्यक्रम
आकाशवाणी के सभी केंद्रों से प्रतिदिन सायं 7.45 से 8.15 तक

पढ़ें

"खेती की बाता" मासिक अखबार
डाक से मंगवाने के लिए मात्र 12 रुपये वार्षिक शुल्क निकटतम कृषि कार्यालय में जमा करायें

मिलें

नजदीकी कृषि कार्यालय या जिले के कृषि विज्ञान केन्द्र में

लॉग ऑन करें

www.krishi.rajasthan.gov.in
(विभागीय वेबसाइट)
www.mkisan.gov.in
www.farmer.gov.in
(संदेश व अन्य जानकारी)

ट्रे में सब्जी उत्पादन-तकनीक

सब्जी उत्पादन के लिए नई तकनीक इजाजत की गई है जो किसानों के लिए नई ऊर्जा और उम्मीद लेकर आई है— यह तकनीक है ट्रे में सब्जियों की खेती। अगर इसे सरल भाषा में समझें तो यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें कम पानी और कम मिट्टी में अधिक से अधिक सब्जियाँ उगाई जा सकती हैं। इस तकनीक में प्लास्टिक की ट्रे में मिश्रण भरकर सब्जियाँ उगाई जाती हैं। इससे कम लागत में उत्तम गुणवत्ता वाली सब्जियों का उत्पादन किया जा सकता है। इस तकनीक में पोषक तत्वों को ड्रेनिंग के माध्यम से या छिड़काव कर पौधों को उपलब्ध करवाये जाते हैं। इस तकनीक को सब्जियों में प्रयोग करने से काफी बेहतर परिणाम मिलते हैं। इस तकनीक से मिर्च, भिंडी, घनियाँ, करेला, ककड़ी, ग्वारफली, टमाटर का प्रमुख रूप से उत्पादन किया जा सकता है। इन सब्जियों को 3-4 इंच मिट्टी में भी आसानी से उगाया जा सकता है। इस तकनीक में बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है।

ट्रे के लिए मिश्रण तैयार करना: एक समान मृदा विन्यास वाले मिश्रण में वर्मीकम्पोस्ट तथा लकड़ी का बुरादा या नारियल की जटा को मिट्टी में मिलाया जाता है। इस मिश्रण को मिलाकर एक-सा कर लिया जाता है। बड़े कणों को अलग कर दिया जाता है। यदि मिट्टी अधिक सूखी हो तो उसे हल्का नम कर लिया जाता है। इसके बाद इसे वर्मीकम्पोस्ट में मिलाया जाता है। यह मिश्रण गीला या चिपचिपा नहीं होना चाहिये। इस सामग्री को मिलाने के लिए इन्हें परतों में ढेर कर दिया जाता है। बाद में इसे फावड़े से मिला दिया जाता है। मृदा मिश्रण इस्तेमाल करने से पहले

उपचारित कर लेना चाहिये क्योंकि मिट्टी में अधिकांशतः निमेटोड्स, फफूँद एवं जीवाणु पाये जाते हैं जो पौधों को हानि पहुँचा सकते हैं जिससे पौधों में आर्द्रगलन जैसी कई बीमारियाँ हो सकती हैं। इन बीमारियों को फैलाने वाले कवकों



को रोकने के लिए मिश्रण को बाविस्टीन, ट्राइकोडर्मा या फार्मलडीहाइड आदि से उपचारित कर लेना चाहिये। उसके बाद ट्रे में ग्रीन नेट बिछाकर मिश्रण भर दिया जाता है, फिर उपचारित बीज या पौधे लगाये जाते हैं।

किफायती व फायदेमंद: इस तकनीक की विशेषता यही है कि इसमें पानी की बहुत कम जरूरत होती है। जिन किसानों को सिंचाई के साधनों का इन्तजाम करने में परेशानी आती है या आर्थिक रूप से इतने कमजोर हैं कि सिंचाई की व्यवस्था का खर्च वहन नहीं कर सकते हैं उनके लिए यह तकनीक वरदान साबित होगी। इस तकनीक से किसान सब्जियों की बेहतर व अधिक उपज ले सकते हैं। इसकी दूसरी सबसे अच्छी बात यह है कि यह उन किसानों के लिए काफी लाभदायक है जो सूखे और भूमिहीन यानि जमीन की कमी से जुझ रहे हैं। इसके अलावा इस विधि से फसल चक्र अपनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती है क्योंकि ट्रे के अन्दर एक सब्जी की फसल समाप्त

होते ही उसमें दूसरी सब्जी का उत्पादन शुरू कर सकते हैं।

कीटनाशकों से छुटकारा: भारत में किसानों द्वारा कीटनाशकों के अन्धाधुन्ध उपयोग से उत्पादन में जबरदस्त गिरावट आई है। देश में हर साल कीटनाशकों के गलत उपयोग से 18-20 प्रतिशत फसलें नष्ट हो जाती हैं एवं उपज की गुणवत्ता में भी कमी आती है तथा किसानों की जेब पर भी अतिरिक्त भार पड़ता है। इस तकनीक से ट्रे के ऊपर नेट लगा देने से कीड़े-मकोड़े सब्जी को नुकसान नहीं पहुँचा पाते हैं। कीट आदि न लगने से सब्जियों की गुणवत्ता काफी अच्छी बनी रहती है।

शहरों में भी ट्रे में सब्जी उत्पादन:

ज्यादातर लोगों में यह धारणा होती है कि किसान और खेती का मतलब है गाँव। किसी स्तर तक यह बात सही भी है कि कृषक वर्ग गाँवों में ही बसता है। लेकिन ट्रे में सब्जी उत्पादन ने इस बात को काफी हद तक बदल दिया है। लोग इस तकनीक को शहरों में भी आजमा रहे हैं। शहर में बने मकान के गार्डन में या छत पर ट्रे में सब्जी उत्पादन लिया जा सकता है। यह स्वास्थ्य के नजरिये से भी काफी लाभप्रद है।

इस तकनीक को अपनाकर किसान कम लागत में ज्यादा सब्जियाँ उगाकर काफी लाभ कमा सकते हैं एवं शहर में निवास करने वाले भी अपने हाथों से उगाई गई सब्जी का आनन्द ले सकते हैं।

कपास की फसल में सफेद मक्खी नियंत्रण के उपाय

● प्रथम दो छिड़काव नीम कीटनाशकों 5 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर करने के बाद थायोमिथोग्जाम 25 डब्ल्यू जी. 50 ग्राम मात्रा 100 लीटर पानी तथा डाईफेनथूरान 50 डब्ल्यू पी. 150 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर बारी-बारी से छिड़काव करें।

● सफेद मक्खी के बच्चे व व्यस्कों को मारने वाले कीटनाशकों का बारी-बारी से स्रे करें।

● इमिडाक्लोप्रिड, एसीटामिप्रिड, ऐसीफेट, बाईफेनथिन तथा फिप्रोनिल व सायपर, फेनवाल, डेल्टा, एल्फा आदि

सिन्थेटिक पायरेथ्रोइड का स्रे नहीं करें।

● सप्ताह में कम से कम दो बार सफेद मक्खी के प्रकोप का पता लगाने के लिए फसल का सर्वे करें।

● फसल की बढ़वार के अनुसार 75 से 100 लीटर पानी प्रति बीघा प्रयोग करें।

● स्पाईरो मे सीफै न, डाईफेनथूरान तथा फ्लोनिकामाइड कीटनाशकों को पहले 3-4 लीटर पानी में

मिलाकर 15-30 मिनट तक अच्छी तरह मिलाकर घोल तैयार करें और उसके बाद ट्रेक्टर के ड्रम/ डोलकी में मिलायें।



ट्राइकोडर्मा मित्र फफूँद द्वारा मृदा जनित व्याधियों का उपचार

दलहनी, तिलहनी, सब्जियाँ एवं नकदी फसलों जैसे कपास, मूंगफली, चना, जीरा आदि में सर्वाधिक नुकसान मृदा जनित कवकों द्वारा उत्पन्न जड़ गलन, तना गलन, कॉलर रोट तथा उखटा इत्यादि रोगों से होता है। इन बीमारियों की रोकथाम हेतु बीज उपचार के काम में आने वाले पौध संरक्षण रसायनों से बीज उपचार किया जाता है। इनके अन्धाधुन्ध प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषण, मनुष्यों एवं जीव-जन्तुओं पर हानिकारक प्रभाव आदि के होने की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। रासायनिक कवक नाशियों के प्रयोग के दुष्प्रभाव को दृष्टिगत रखते हुए फसलों में लगने वाले जड़ गलन, उखटा एव तना गलन आदि भूमि जनित फफूँद रोगों की रोकथाम के लिये जैविक दवा ट्राइकोडर्मा नामक मित्र फफूँद विकसित की गई है जो मृदा जनित फफूँद से पैदा होने वाले रोगों के जैविक नियंत्रण में प्रभावकारी भूमिका अदा करती है।

ट्राइकोडर्मा की कार्य विधि — ट्राइकोडर्मा संवर्ध में इस मित्र फफूँद के असंख्य जीवाणु जीवित अवस्था में होते हैं। इससे आस-पास इस मित्र फफूँद की भारी संख्या कृत्रिम रूप से निर्मित हो जाती है। ट्राइकोडर्मा चूँकि मृदा में स्थिति रोग उत्पन्न करने वाले हानिकारक कवकों का प्रति जैविक है तथा यह उनकी वृद्धि रोककर उन्हें धीरे-धीरे नष्ट करता है। जिससे ये हानिकारक कवक फसलों की जड़ों को संक्रमित कर रोग उत्पन्न करने में असमर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार

ट्राइकोडर्मा एक मित्र फफूँद के रूप में मृदा में उपस्थित हानिकारक शत्रु फफूँदों से फसलों की रक्षा करता है।

ट्राइकोडर्मा संवर्ध से उपचार के गुण एवं लाभ—ट्राइकोडर्मा अनेक फसलों में जैसे कपास, मूंगफली, चना, सरसों, अरहर, जीरा आदि में भूमि जनित फफूँद रोगों जैसे जड़ गलन, उखटा एवं तना गलन रोगों के नियंत्रण में प्रभावी है।

■ जब फसलों में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है तो ऐसी अवस्था में ट्राइकोडर्मा मित्र फफूँद संवर्ध द्वारा मृदा जनित कवक रोगों का जैविक नियंत्रण करना संभव होता है।

■ रसायनिक कवक नाशियों के प्रति, रोग उत्पन्न करने वाले हानिकारक फफूँदों में, प्रतिरोध उत्पन्न होने की संभावना रहती है, जबकि ट्राइकोडर्मा के प्रति प्रतिरोध उत्पन्न नहीं होता। अतः इस ट्राइकोडर्मा के प्रयोग से मृदा जनित कवक रोगों का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

■ ट्राइकोडर्मा के प्रयोग से किसी भी प्रकार का हानिकारक प्रभाव नहीं होता। अतः पर्यावरण प्रदूषण भी नहीं होता।

■ ट्राइकोडर्मा संवर्ध के प्रयोग से पोषक तत्वों की उपलब्धता बढ़ जाती है जिससे पौधों का उचित विकास होता है तथा

अधिक उत्पादन प्राप्त होता है।

■ ट्राइकोडर्मा संवर्ध का उपयोग मनुष्यों, जानवरों, पक्षियों तथा लाभकारी कीटों के प्रति हानि रहित होता है।

■ यह वायुमण्डलीय नत्रजन स्थिर करने वाले जीवाणु— राइजो बियम, एजोटोबेक्टर, एजोस्पाइरिलम तथा फॉसफेट विलेयक जीवाणु (पी एस बी) आधारित संवर्धों (कल्चर) के साथ उपचार योग्य है।

ट्राइकोडर्मा संवर्ध से उपचार की विशेषताएं—

■ सामान्य परिस्थितियों में उपचार द्वारा फसलों की जड़ों के आस-पास प्रभावी रूप में स्थापित हो जाने की अपूर्व क्षमता होती है।

■ कवकनाशी पर होने वाले खर्च में बचत होती है एवं उपचार करना आसान है।

■ प्राकृतिक तौर पर विखण्डित होने योग्य है तथा भूमि जनित कवक रोग के नियंत्रण का सस्ता साधन है।

उपयोग विधि

बीजोपचार—भूमि जन्य कवकों से प्रसित होने वाली फसलों के उपचारित किये जाने वाले बीज को किसी साफ बर्तन में रखें तथा बीजों पर थोड़े से पानी के छीटे दें। अब बीजों में 4 से 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा संवर्ध प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर अच्छी तरह से उलट पलट दें तथा सुनिश्चित करें कि संवर्ध की एक समान परत बीजों के चारों ओर चिपक गई है। अब बीज की बुवाई कर दें।

जड़ोपचार—एक बर्तन में 5 लीटर पानी लेकर उसमें 500 ग्राम ट्राइकोडर्मा संवर्ध अच्छी तरह घोलकर मिला दें तथा

रोपित की जाने वाली पौधे की जड़ों को इस घोल में 30 मिनट तक डुबोकर फिर इन पौधों को रोपित करें एवं घोल की शेष मात्रा को खेत की मिट्टी में मिला दें।

मृदा उपचार—बुवाई पूर्व आखिरी जुताई से पहले एक किलो ट्राइकोडर्मा संवर्ध 30 किलो कम्पोस्ट अथवा गोबर की खाद में मिलाकर प्रति एकड़ खेत की मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें तत्पश्चात बुवाई करें।

नर्सरी उपचार—नर्सरी में बुवाई से पूर्व 5 ग्राम प्रति वर्ग मीटर क्षेत्र की दर से ट्राइकोडर्मा संवर्ध मिट्टी में मिला दें तथा फिर बुवाई करें।

सावधानियां—

■ संवर्ध को सीधी धूप व गर्मी से बचाकर छायादार स्थान में भण्डारण करें तथा संवर्ध के पैकेट पर अंकित अंतिम तिथि से पूर्व उपयोग करें।

■ बीज को ट्राइकोडर्मा मित्र फफूँद से उपचारित करने पर उपचार से पहले एवं बाद में किसी भी अन्य बीज उपचार करने वाले कवकनाशी रसायन जैसे थाईरम, बाविस्टिन, मैन्कोजेब आदि से बीज को उपचारित नहीं करें।

■ ट्राइकोडर्मा को बीज उपचार एवं भूमि उपचार में अनुमोदित मात्राओं में प्रयोग करें। भूमि उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा की निर्धारित मात्रा को गोबर की खाद में मिलाकर दें।

राज्य की सभी समन्वित कीट प्रबन्धन प्रयोगशालाओं जयपुर, अजमेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, जोधपुर, बांसवाडा एवं हनुमानगढ़ में मित्र फफूँद ट्राइकोडर्मा का उत्पादन किया जाता है।

ऐसे मंगवायें "खेती री बाता"

घर बैठे वर्षभर खेती री बाता अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कमरा नं.-250, कृषि आयुक्तालय, पंत कृषि भवन, जयपुर (302005) के नाम 12/- रुपये का मनीआर्डर भेजें। स्वयं का साफ-साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

डाक पं.सं. JaipurCity/409/2015-17

आर.एन.आई - 70296/98



प्रेषक-
उप निदेशक, कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर-302005

प्रेषिति-

अतिरिक्त आमदनी के लिए अन्तरासस्यन फसलें लेवें

खेत में खड़े स्थायी फलदार पौधों के मध्य की जगह में प्रारम्भिक वर्षों में उपयुक्त मौसमी फसलों की बुवाई कर पैदावार प्राप्त करने को अन्तरासस्यन फसल (इन्टर-क्रोपिंग) कहते हैं, इन्हें



अंतरवर्ती फसलें भी कहते हैं।

फलदार पौधों के फल देने तक, आमदनी बढ़ाने व साधनों का भरपूर उपयोग करने के लिए पौधों की कतारों के बीच रही खाली भूमि का उपयोग करना आवश्यक होता है, अतः अंतरवर्ती फसल लेनी चाहिये ताकि आमदनी का साधन बराबर बना रहे। फलन प्रारम्भ होने में पौधरोपण के बाद 4-5 वर्ष लग ही जाते हैं। अंतरवर्ती फसल लेने से पूर्व वृक्षों का आकार व उनमें फल लगने का समय, बाजार व यातायात के साधन आदि को ध्यान में रखकर ही फसल का चुनाव किया जाना चाहिये।

अन्तरासस्यन फसलों की खेती में सावधानी रखने योग्य बातें

●फसलें लेने के लिए गहरी जुताई नहीं

करें अन्यथा फलदार पौधों की जड़ों को नुकसान पहुँचने की संभावना रहती है, अतः फलदार पौधों के चारों ओर ढाई फीट का क्षेत्र छोड़कर ही फसलें लेनी चाहिये।

●उन्ही अंतरवर्ती फसलों का चयन करें जो शीघ्र पकने वाली हों तथा जिनकी जड़ें गहरी नहीं जाती हों।

●अंतरवर्ती फसलों की खाद, उर्वरक, पानी और पौध संरक्षण कार्यों की आवश्यकता की पूर्ति अतिरिक्त रूप से की जानी चाहिये ताकि फलदार पौधों को दी जाने वाली खाद व पानी के साथ प्रतिस्पर्द्धा न करें।

●अंतरवर्ती फसलें अधिक ऊँची बढ़ने वाली नहीं होनी चाहिये अन्यथा फलदार पौधों को पर्याप्त प्रकाश नहीं मिल पायेगा।

●अंतरवर्ती फसलों में लगाने वाले कीड़ों व बीमारियों से फलदार पौधों को हानि नहीं होनी चाहिये। ऐसी फसलों का चयन करें जिनमें कीट व रोगों का प्रकोप हो तो भी फलदार पौधों तथा अंतरवर्ती फसलों में कीट नियंत्रण हेतु एक ही तरह के पौध संरक्षण रसायनों का उपयोग कारगर हो सके।

●फलदार पौधों में ज्यों ही फूल व फल आना आरम्भ हो जाये तो अंतरवर्ती फसलें उगाना बंद कर देना चाहिये अन्यथा बगीचों पर इसका विपरीत प्रभाव पड़

सकता है।

●एक अंतरवर्ती फसल लेने के बाद उस भूमि को कुछ समय के लिए खाली छोड़ देना चाहिये।

●अंतरवर्ती फसलें नया बगीचा लगाने के बाद 4-5 साल से ज्यादा नहीं लेनी चाहिये।

●अंतः फसलन द्वितीय महत्व की हैं और फलदार पौधे प्राथमिक महत्व के हैं। अतः बगीचे के मुख्य पौधों को फलने-फूलने के लिए पर्याप्त जगह के साथ-साथ उसकी पोषण आवश्यकताओं का भी ध्यान रखें।

●अंतरवर्ती फसलों की सिंचाई की आवश्यकता यथासंभव फलदार पौधों के अनुरूप होनी चाहिये। फलों के लिए

सिंचाई की व्यवस्थाओं का अलग से ध्यान रखा जाना चाहिये ताकि उनकी विभिन्न क्रान्तिक अवस्थाओं पर सिंचाई हो सके।

●बगीचे में अन्तरासस्यन फसलों के रूप में सब्जियाँ, दलहनी फसलें व हरे चारे की फसलें ली जा सकती हैं, परन्तु दलहनी फसलों एवं सब्जियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिये।

●लंबी बढ़ने वाली फसलें, जैसे- गन्ना, बाजरा, अरहर, कपास, मक्का, ज्वार, गेहूँ आदि फसलें न लें।

●छोटी व झकड़ा जड़ों वाली सब्जियों व दलहनी फसलों का चयन करना चाहिये। फलदार पौधेवार अंतरवर्ती सब्जियों का विवरण:-

फलदार पौधे	खरीफ	रबी
आम	बैंगन, टमाटर, मिर्च, चंवला, ग्वार, पपीता आदि	मटर, गोभी, प्याज, मेथी, पालक, धनियाँ
अमरुद	लोबिया, ग्वार, मूँग, उड़द	गोभी, मटर, मेथी, मूली, गाजर, बरसीम
अनार	मूँग, लोबिया, सब्जियाँ व दालें	मटर, चना, मूली, गाजर
आँवला	मूँग, लोबिया	मटर, चना, मूली, गाजर
बेर	ग्वार, मूँग, लोबिया, मोठ, चंवला	मटर, जीरा, मिर्च
नींबू	लोबिया, सनई, ढेंचा, पपीता, करेला, सोयाबीन, सेम, टमाटर, भिण्डी	गाजर, मूली, मटर, चना, मेथी

दीमक का जैविक प्रबन्धान : एक कारगर उपाय

अनाज वाली फसलों विशेषकर बाजरा, ज्वार, मक्का, गेहूँ व जौ में दीमक का में अधिक प्रकोप होता है। खड़ी फसल में सामान्यतया किसान रसायनों का उपयोग करते हैं। यह तरीका महंगा एवं खर्चीला है तथा मृदा को प्रदूषित करता है। जैव नियंत्रण कारकों विशेषकर मित्र फफूंद मेटाराइजियम एनिसोपलाई एवं ब्यूवेरिया बेसियाना का संवर्धन, नीम का तेल, अरण्डी की खली का प्रयोग दीमक नियंत्रण के लिए सत्त एवं स्थाई कारक हैं।

मेटाराइजियम एनिसोपलाई मित्र फफूंद:- प्राकृतिक रूप से भूमि में पाई जाने वाली मेटाराइजियम एक मित्र फफूंद है। यह फफूंद कई प्रकार के कीटों में परजीवी की तरह प्रवेश कर उन्हें नष्ट कर देती है। यह भूमिगत कीटों विशेषकर सफेद चींटी यानी दीमक को नियंत्रित करती है।

उपयोग का तरीका:- बाजरा, ज्वार, मक्का, गेहूँ व जौ में दीमक की रोकथाम हेतु 2.5 से 5 किलो मेटाराइजियम 100 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट या केंचुआ खाद में मिलाकर 72 घंटे संवर्धन करें जिससे माईसीलियम वृद्धि कर सकें। इसे बुवाई से पूर्व या प्रथम निराई-गुड़ाई के बाद या खड़ी फसल में एक हैक्टर में भुरकाव कर सिंचाई करें।

भूमि में मिलाने पर फफूंद के कोनिडियम (स्पोर्स) कीड़ों की त्वचा पर अंकुरित होकर शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। शरीर में प्रवेश के बाद हानिकारक जहरीला पदार्थ बनाते

हैं जिससे धीरे-धीरे कीट की मृत्यु हो जाती है एवं कीट वंश वृद्धि की स्थिति में नहीं रहता है। मित्र फफूंद मेटाराइजियम एक दीर्घ अवधि तक असरदार, लाभकारी, वातावरण एवं भूमि प्रदूषण रहित एवं मनुष्य एवं पशुओं के लिए सुरक्षित है। इसे ठण्डे हवादार स्थान पर रखें। निर्माण तिथि से 120 दिन के अन्दर उपयोग करें। मित्र फफूंद के उपचार से पूर्व या बाद में रसायनों का उपयोग नहीं करें।

ब्यूवेरिया बेसियाना मित्र फफूंद:- मेटाराइजियम की तरह ब्यूवेरिया भी दीमक का नियंत्रण करता है। यह बाजरा, ज्वार, मक्का, गेहूँ, जौ व फलदार पौधों में उपयोग किया जाता है।

उपयोग का तरीका:- 2.5 किलो ब्यूवेरिया को 100 किलोग्राम सड़ी गोबर की खाद या कम्पोस्ट या केंचुआ खाद में मिलाकर 72 घंटे (नमी की अवस्था) में ढक कर रखें ताकि माईसीलियम वृद्धि कर सकें। तैयार संवर्धन का खड़ी फसल में भुरकाव कर सिंचाई करें। भूमि में मिलाने या छिड़काव के उपरान्त फफूंद का कोनिडियम शत्रु कीटों के शरीर की त्वचा में चिपक कर अंकुरित हो जाता है। फफूंद हाइफा में से रस स्रावित करती है जिससे शत्रु कीटों के शरीर की त्वचा यानी हार्ड क्यूटिकल घुल कर त्वचा में प्रवेश कर कीटों की वृद्धि रोक देता है।



फफूंद शरीर में ब्यूवेरिया नामक जहरीला स्राव बनाता है जो कीट की प्रतिरोधक क्षमता को नष्ट करता है जिससे कीट मर जाता है। फलदार पौधों में 50-100 ग्राम फफूंद संवर्धन प्रति पौधे को उम्र के हिसाब से दें। सिंचाई करें। भूमि में मिलाने या छिड़काव के उपरान्त फफूंद का कोनिडियम शत्रु कीटों के शरीर की त्वचा में चिपक कर अंकुरित हो जाता है। फफूंद हाइफा में से रस स्रावित करती है जिससे शत्रु कीटों के शरीर की त्वचा यानी हार्ड क्यूटिकल घुल कर त्वचा में प्रवेश कर कीटों की वृद्धि रोक देता है। फफूंद शरीर में ब्यूवेरिया नामक जहरीला स्राव बनाता है जो कीट की प्रतिरोधक क्षमता को नष्ट करता है जिससे कीट मर जाता है। फलदार पौधों में 50-100 ग्राम फफूंद संवर्धन प्रति पौधे को उम्र के हिसाब से दें।

उपलब्धता:- मेटाराइजियम एवं ब्यूवेरिया पर अनुसंधान राज्य के ग्राह्य परीक्षण केन्द्रों पर स्थित क्षेत्रीय प्रयोगशालाओं ए.टी.सी. रामपुरा (जोधपुर), सुमेरपुर (पाली), तबीजी (अजमेर), लूणकरणसर (बीकानेर) श्रीकरणपुर (गंगानगर), चितौड़गढ़ तथा बासवाड़ा में किया जा रहा है। निजी कम्पनियों तथा राज्य की आई.पी.एम. प्रयोगशालाओं में यह उपलब्ध है।

छत्रपुरा (बूंदी), मलिकपुर (भरतपुर), चितौड़गढ़ तथा बासवाड़ा में किया जा रहा है। निजी कम्पनियों तथा राज्य की आई.पी.एम. प्रयोगशालाओं में यह उपलब्ध है।

छत्रपुरा (बूंदी), मलिकपुर (भरतपुर), चितौड़गढ़ तथा बासवाड़ा में किया जा रहा है। निजी कम्पनियों तथा राज्य की आई.पी.एम. प्रयोगशालाओं में यह उपलब्ध है।

चितौड़गढ़ तथा बासवाड़ा में किया जा रहा है। निजी कम्पनियों तथा राज्य की आई.पी.एम. प्रयोगशालाओं में यह उपलब्ध है।

अरण्डी की खली का प्रयोग:- दीमक प्रभावित क्षेत्रों में 500 किलो अरण्डी की खली प्रति हैक्टर की दर से अन्तिम जुताई के समय भूमि में मिलायें। अरण्डी की खली खेत में सीधे डालने पर देर से विघटित होती है अतः खेत में डालने से आधा घंटे पूर्व पानी से गीला कर लें तथा पाउडर बनाकर खेत में डालें।

नीम का तेल:- खड़ी फसल में दीमक नियंत्रण के लिए 4 लीटर नीम का तेल प्रति हैक्टर की दर से सिंचाई के पानी के साथ दें या 50-60 किलो बजरी में मिलाकर भुरकाव कर सिंचाई करें।

दीमक के प्रभावी एवं कारगर नियंत्रण के लिए मित्र फफूंद के उपयोग के अलावा फसल चक्र अपनायें, गर्मी की गहरी जुताई करें। दीमक की कॉलोनियों (घर) को नष्ट करें। फसल बोलने से पूर्व बीजोपचार अवश्य करें। फसल में सिंचाई निश्चित अन्तराल पर करते रहें।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक उप निदेशक, कृषि (सूचना), कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।

प्रकाशक - खेमराज शर्मा
सम्पादक - डॉ. पूनम चौधरी
परामर्श - जे.पी. यादव
- राजेन्द्र सिंह मनोहर
डिजाइनर - रैजनल मैसी